दिनाँक :- 10-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (अनुशांगिक)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास (कला)

इकाई :- पाँच

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- वैदिक सभ्यता (आर्थिक जीवन)

आर्थिक जीवन (Economic life)- आर्यों की सभ्यता प्रधानता : ग्रामीण सभ्यता थी। उनके आर्थिक जीवन का केन्द्र बिंदु गाय थी। इसलिए इस समय हमें ग्रामीण अर्थव्यवस्था देखने को मिलती है। अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि और पशुपालन था। छोटे-छोटे उद्योग-धन्धों का विकास हुआ था। वाणिज्य-व्यापार सीमित पैमाने पर होता था।

पशुपालन :- आर्य भारत मे पशुपालको के रूप मे आये थे। उनका निर्वाह मुख्यतः पशु उत्पादो से होता था और कुछ समय तक पशुपालन ही उनका मुख्य व्यवसाय रहा। गाय, बैल, घोड़ा, गधा, खच्चर, कुत्ता, भेड़, बकरी पालतु जानवर थे। आर्य अपने पशुओ को स्वामित्व पहचान के लिए कुछ चिह्न लगाते थे। इन पशुओ से विभिन्न प्रकार की काम लिये जाते थे। बैल हल जोतने के काम आता था। पशुओ का व्यापार होता था। पालतु पशुओ मे गाय की पूजा करते थे। ऋग्वेद मे गाय को अघ्न्या कहा गया है। गाय क्रय-विक्रय का माध्यम था। धार्मिक तथा धार्मिक कार्यो मे गाय दक्षिणा के रूप मे दी जाती थी। साधारणतया गोमांस खाना वर्जित था। किसी परिवार की आर्थिक सम्पन्नता का मापदण्ड गोधन था। गायो की देखभाल के लिए एक व्यक्ति था जो 'गोप' कहलाता था। भेड़ के ऊन से गर्म

कपड़ा तैयार किया जाता था। ग्रामों में पशुओं के लिए चारागाह की सुविधा थी।

आर्यों द्वारा पाले गये पशुओं में घोड़े को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था। यातायात तथा युद्ध के लिए घोड़ा अनिवार्य था। वह मनुष्यों तथा देवताओं के रथ खींचने के काम आता था। युद्ध में घोड़े का विशेष महत्व था। जंगली पशुओं में आर्यों को पहले सिंह की जानकारी हुई। हाथी एक जिज्ञासा की वस्तु थी। सर्प अनिष्ठ का द्योतक था। कृषि:- जब आर्य स्थायी रूप से बस गये तो उनके पेशे में परिवर्तन आया। पशुपालन के स्थान पर उन्होंने कृषि को अपनाया। आर्य लोहे का प्रयोग जानते थे। लोहे के प्रयोग से भूमि साफ करना अब सरल हो गया था। लोहे की कुल्हाड़ी से घने जंगलों को साफ करने में उन्हें बड़ी मदद मिलती थी। जंगलों को काटकर वे भूमि

को खेती के लायक बनाते थे। प्रारंभ में कृषि-योग्य भूमि पर पूरे जन का अधिकार होता है। लेकिन ज्यों-ज्यों जन इकाइयाँ समाप्त होती गयी, भूमि गाँवों के परिवारों में बँटती गयी। इस प्रकार निजी सम्पत्ति का जन्म हुआ और इसके साथ ही स्वामित्व, भूमि के लिए झगड़े, उत्तराधिकार का प्रश्न आदि समस्याएँ भी उत्पन्न हुई।

उपजाऊ जमीन को उर्वरा या क्षेत्र कहा जाता था। आर्य जुताई, बुआई, सिंचाई, कटाई आदि खेती की प्रक्रिया जानते थे। खेत हल से जोता जाता था। बैलों द्वारा खींचा जाता था। खेत की उपज बढ़ाने के लिए खाद का उपयोग किया जाता था। खेती की सिंचाई कुएँ, नहर, झील तथा नदी से की जाती थी। ऋग्वेद में नहरों का उल्लेख मिलता है। आर्य जौ, धान, गेहूँ, मसूर, उड़द और तिल उपजाते थे।

उद्योग-धन्धा: कृषि को मुख्य व्यवसाय के रूप में

मे अपनाने के फलस्वरूप अनेक व्यवस्थो का विकास हुआ। इस समय गृह उद्योग, शिल्प तथा दस्तकारी की काफी उन्नति हुईथी। लकड़ी के सामान तैयार करना, आभूषण बनाना चमड़े के सामान बनाना, नक्काशी करना, मिट्टी के बरतन बनाना आदि प्रमुख उद्योग थे। ऋग्वेद मे बढ़ई, कार्मार (लुहार) सुनार, चमार, धुलाई वैद्य तथा पत्थर काटनेवालो का उल्लेख मिलता है। चर्मकार विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ बनाते थे। चमड़े मे थैले कोड़े, लगाम प्रत्यंचा आदि बनाये जाते थे। बढ़ई का पेशा समाज से अत्यन्त प्रतिष्ठित था। वह रथ, हल और गाड़ी बनाता था। धातुकार ताँबे, काँसे और लोहे के सामान बनाता था। सुनार सोना चाँदी के आभूषण बनाता था। स्त्रियाँ कताई बुनाई का काम करती थी। कुम्हार मिट्टी का बरतन बनाता था। धुलाई कपड़ा धुलने और रंगने का काम

करता था। लोहार रथ के पहिये, हल के फाल और अस्त्र शस्त्र बनाता था। इन लोगो का समाज में सम्मान था।

व्यापार :- कृषि ने व्यापार का मार्ग प्रशस्त किया। प्रारंभ में व्यापार स्थानीय क्षेत्रो तक सीमित था। सम्भवतः आर्यो ने दूर जाने का साहस नही किया लेकिन ऋग्वेद में जलयानो और समुद्री यात्राओ का वर्णन है। यह वर्णन पूर्णतया काल्पनिक नही हो सकता है। ऋग्वेद में अनेक बार समुद्र का उल्लेख हुआ है। इसलिए कुछ विद्वानो का मत है कि ऋग्वैदिक आर्यो का विदेशो के साथ सम्पर्क था।

व्यापार निश्चित रूप से सीमित पैमाने पर होता था। वैदिक साहित्य में व्यापार के मार्ग, विनिमय मौलभाव और ब्याज की चर्चा मिलती है। सिक्के का प्रचलन नही था। व्यापार में वस्तुओ का आदान प्रदान होता था। स्थल मार्ग से बैलगाड़ी तथा रथो में वस्तुऐ एक जगह से दूसरी जगह पहुँचायी जाती थी।

Scanned with CamScanner

निष्क का उल्लेख मिलता है। जिसे कुछ विद्वान सिक्का मानलेते है। ऋण लेने-देने की प्रथा प्रचलित थी। ब्याज पर ऋण दिया जाता थी। मूलधन का आठवां या सोलहवां हिस्सा ब्याज के रूप में दिया जाता था। ऋण चुकाना धार्मिक दृष्टि से आवश्यक माना जाता था। ऋण नही चुकाने पर ऋण लेनेवालो को दास बनाना पड़ता था। लेकिन इसका समय निश्चित था। समय पूरा होने जाने पर ऋणी स्वतंत्र हो जाता था।

धर्म एंव धार्मिक विश्वास (Religion and Religious Beliefs)

ऋग्वैदिक आर्यो का धार्मिक जीवन आदिम अवस्था से बहुत आगे बढ़ चुका था। उनका धर्म प्रेत-पूजा, जादू-टोना पत्थर और लकड़ी के कुन्दो की पूजा से मुक्त था। उन्होने असभ्य अन्धविश्वासो से ऊपर उठकर प्राकृतिक दृश्यो को अनुराग और श्रद्धा से देखा और उनमे उन्हे दिव्य सत्ता का आभास हुआ।